अमृत प्रार्थना -श्री गणेश जी

हे गजानंद गणेश!आप बुद्धि के अधिष्ठात्री देवता हैं। सबको
बुद्धि प्रदान करते हैं, विवेक प्रदान करते हैं।
संपूर्ण कार्यों को करने के पूर्व सर्वप्रथम आपही की पूजा की जाती है। जितने भी मांगलिक कार्य हैं, जितने भी शुभ कार्य हैं तो सबसे पहले आपकी ही पूजा की जाती है। उसके उपरांत ही अन्य देवी-देवताओं की पूजा की जाती है।
आप विघ्नहर्ता हैं! किसी भी कार्य को करने में जो विघ्न
आते हैं, यदि आप की अग्रपूजा हो जाए तो आप आने वाली संपूर्ण बाधाओं को, विघ्नों को दूर कर देते हैं तथा सबको निर्मल बुद्धि प्रदान करते हैं,भौतिक विधि प्रदान करते हैं,आध्यात्मिक बुद्धि प्रदान करते हैं। आपके दिव्य चरित्र से माता-पिता के प्रति जो आपकी उद्दात भावना है, आदर की भावना है,वह हमें प्राप्त होती है ।तो आपसे यही निवेदन है, यही प्रार्थना है कि हम सबके हृदय में भी अपने अपने माता-पिता के प्रति वह उद्दात भावना हो,व आभार की भावना व सेवा भावना प्राप्त हो। हमारे संपूर्ण कार्य निर्विघ्न पूर्ण हो और हमें भी वह सद्विवेक,वह
सद्बुद्धि प्राप्त हो।